आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद (Subjective Idealism)

आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद की स्थापना के लिए बर्कले ने जॉन लॉक के प्रत्यय प्रतिनिधित्ववाद की आलोचना की| उसने नास्तिकता का विरोध किया और इसके लिए उन्होंने जड़वाद का खंडन करना आवश्यक समझा| बर्कले ने इसके खंडन के प्रयास में बाह्य जड़ जगत की सत्ता को स्वीकार किया| इसके विरोध में उन्होंने यह बताया कि हमारे ज्ञान की एकमात्र विषय हमारे प्रत्यय हैं|

जॉन लॉक के अनुसार बाह्य जगत की वस्तुएं द्रव्य हैं और उनके कुछ गुण होते हैं| यह गुण दो प्रकार की होते हैं- एक मूल गुण और दूसरे गौण गुण| मूल गुण में आकृति, घनत्व, आयतन आदि आते हैं और गौण गुण में रूप, रस, गंध और स्पर्श आदि आते हैं| लाख के अनुसार मूल गुण वस्तुगत हैं क्योंकि सभी को इनका एक सा ही अनुभव होता है| गौण गुण आत्म कथ होते हैं क्योंकि अलग-अलग व्यक्तियों को इनका अनुभव अलग अलग तरीके से होता है|

लॉक मानते हैं कि मूल गुणों का भी प्रत्यक्ष अनुभव हमें नहीं होता| वह गौण गुण की तरह जिनका हमें अनुभव होता है हमारे मानसिक प्रत्यय मात्र हैं| भेद केवल यह है कि मूल गुणों की धारणाएं वस्तु गत मूल गुण के समान हैं और गौण गुण केवल आत्मगत या मानसिक है| बर्कले ने लॉक के विचारों की आलोचना करते हुए कहा जॉन लॉक की सबसे बड़ी कमी यह है उन्होंने वस्तु तथा वस्तु संबंधी धारणाओं या प्रत्ययों के बीच भेद करके बहुत बड़ी भूल की है| यह कहना कि धारणाओं प्रत्ययों का हमें प्रत्यक्ष अनुभव होता है और वस्तु

अनुभवों से परे है, यह द्वैतवाद है| पर कल लेने हैं इस द्वैतवाद का खंडन किया| बर्कले को यह बात असंगत जान पड़ी हम ऐसी सत्ता में विश्वास करें जिसका हमें अनुभव नहीं होता| बर्कले ने द्रव्य नाम की किसी सत्ता को मानने से इनकार किया| यहीं से बर्कले का प्रत्ययवाद प्रारंभ होता है|

अमूर्त प्रत्यय का खंडन (Rejection of Abstract Ideas)

बाह्य द्रव्यों की सत्ता के लिए जॉन लॉक ने एक प्रमाण दिया था कि हम अमूर्त प्रत्यय अर्थात काल्पनिक सामान्य या जाति के प्रत्यय के आधार पर द्रव्य का ज्ञान प्राप्त करते हैं| जैसे हम विशेषणों (व्यक्तियों) के आधार पर सामान्य की कल्पना करते हैं, यथा विविध मनुष्यों को देखकर मनुष्यत्व की कल्पना करते हैं, वैसे ही विभिन्न गुणों के आश्रय के रूप में द्रव्य सामान्य की कल्पना करते हैं| बर्कले ने बताया कि यह अमूर्त या काल्पनिक प्रत्यय असंभव है| हम इंद्रियों द्वारा विशेषण का ही ज्ञान कर सकते हैं, सामान्य का नहीं| सामान्य मनुष्य की कल्पना करते ही किसी मनुष्य विशेष की आकृति मनुष्य में आती है| काल्पनिक प्रत्यय वदतोव्याघात है| सारे विज्ञान या प्रत्यय वास्तविक होते हैं| ज्ञान का विषय सदा संवेदन या स्वसंवेदन होता है और यह एक विशेष और वास्तविक प्रत्यय होता है| बर्कले सामान्य एवं सार्वभौम प्रत्ययों की सत्ता स्वीकार करते हैं| उनका मानना है कि सामान्य प्रत्यय इंद्रिय अनुभव से नहीं आते और ना इनको अमूर्त या काल्पनिक प्रत्यय कहा जा सकता है| अतः इन तथाकथित प्रत्ययों के आधार पर भी बाह्य द्रव्यों की सत्ता नहीं स्वीकार की जा सकती है|

वास्तव में उनके अनुरूप कोई गुण वस्तु में नहीं है| बर्कले ने लोक के विचारों की आलोचना करते हुए कहा

बर्कले ने यह सिद्ध किया कि बाह्य जड़ पदार्थ का वास्तव में कोई अस्तित्व नहीं है| हम इसका प्रत्यक्ष नहीं कर सकते; क्योंकि प्रत्यक्ष होता है तो केवल गुणों का, बाह्य पदार्थ का नहीं| गुणों के अधिष्ठान के रूप में हम बाह्य पदार्थ का अनुमान भी नहीं कर सकते, क्योंकि गुण वास्तव में संवेदन मात्र हैं और इसलिए आत्मा पर निर्भर है, बाह्य पदार्थ पर नहीं| वह आत्म निष्ठ होते हैं, वस्तुनिष्ठ नहीं| परंतु क्या इन संवेदनों को हमारी आत्मा स्वता उत्पन्न करती हैं? एक आशंका यह होती है कि भले ही संवेदन आत्मा में रहे, किंतु उन संवेदना को आत्मा में उत्पन्न करने की शक्ति तो बाह्य पदार्थ में ही माननी पड़ेगी| बाह्य पदार्थ को इन संवेदनों की उत्पत्ति का कारण मानना पड़ेगा| यदि मैं एज वस्तुतः ना हो, तो आत्मा में उनका संवेदन भी उत्पन्न नहीं हो सकता| हम बहुत से प्रत्यययों की कल्पना कर सकते हैं, किंतु बाह्य पदार्थों के अभाव में उनके संवेदन प्राप्त नहीं कर सकते| किंतु बाह्य पदार्थों के अभाव में उनके संवेदन प्राप्त नहीं कर सकते| फिर, यदि बाह्य पदार्थ हमारे प्रत्यय मात्र हो तो वे सबको लगभग एक ही रूप में क्यों प्रतीत होते हैं? यह तो स्पष्ट है कि जिन संवेदनों को इंद्रियां बाह्य पदार्थों से ग्रहण करती हैं, उन संवेदनों को हम स्वयं उत्पन्न नहीं कर सकते| अतः बाह्य पदार्थ की सत्ता माननी पड़ेगी| बर्कले इसे अनावश्यक और भ्रमपूर्ण विचार कहते हैं| यह सत्य है कि इन इंद्रिय संवेदनों को हमारी आत्मा स्वत: उत्पन्न नहीं कर सकती| किंतु इसका यह अर्थ नहीं कि इन संवेदनों के जनक बाह्य जड़ पदार्थ हैं| जो जड़ है,

जो अशक्त है, जो ना दृष्टा है, ना दृश्य है, जो ना ज्ञाता है ना ज्ञेय है, वह बाह्य पदार्थ हमारी चेतन आत्मा पर कैसे अपने गुणों की (जो उसमें विद्यमान ही नहीं है) छाप अंकित कर सकता है? प्रत्ययों को उत्पन्न करने का सामर्थ्य जड़ में नहीं हो सकता| अतः इन प्रत्ययों की उत्पत्ति का कारण चेतन आत्मा को ही मानना पड़ेगा| और क्योंकि हमारी आत्मा इंद्रिय संवेदनों को स्वयं उत्पन्न नहीं कर सकती, इसलिए इनकी उत्पत्ति का कारण परमात्मा को मानना चाहिए| ईश्वर ही इन इंद्रिय संवेदन रूपी प्रत्ययों को हमारी आत्मा में उत्पन्न करते हैं| यह सामर्थ्य जड़ द्रव्यों का नहीं हो सकता| इस तरह सिद्ध होता है कि बाह्य जड़ पदार्थों की कोई वास्तविक सत्ता नहीं है| लॉक का यह अज्ञेय बाह्य द्रव्य जिसके विषय में कहते हैं कि यह " कुछ है, किंतु मैं नहीं जानता क्या है" यह मूर्खतापूर्ण चेतना शून्य जड़ वास्तव में शून्य है|

मूलगुण एवं उपगुण के भेद का खंडन (Rejection of Primary and Secondary Qualities)

बर्कले लॉक के मूलगुण एवं उपगुण के भेद का खंडन करते हैं| उनके अनुसार मूलगुण और उपगुण का भेद अनुचित है| जॉन लॉक ने कहा कि मूलगुण द्रव्य की वास्तविक धर्म है जो उस में विद्यमान रहते हैं और जिनका कार्य इंद्रियों से संपर्क होने पर हमारे मन में संवेदना के माध्यम से अपने प्रतिबिंब के रूप में प्रत्यय उत्पन्न करने का है| इन मूल गुणों का दूसरा कार्य अपनी शक्ति से हमारी आत्मा में संवेदना के रूप में उपगुण उत्पन्न करने

का है| उपगुण संवेदन रूप हैं और आत्मा में रहते हैं| मूल गुण बाह्य पदार्थ में रहते हैं और मन में केवल अपने प्रतिबिंब अंकित करते हैं| आकार, विस्तार , गति आदि मूल गुण हैं| रूप, रस, गंध आदि उपगुण| बर्कले का तर्क है कि मूलगुण एवं उपगुण में कोई भेद नहीं है| जैसे उपगुण मन में रहते हैं, वैसे ही मूल गुण भी आत्मा में रहते हैं| दोनों का अधिष्ठान मन है, दोनों मानसिक धर्म है| दोनों संवेदन मात्र हैं| दोनों ही इंद्रियों द्वारा ग्रह यह हैं| दोनों आत्मा में उत्पन्न होते हैं, दोनों प्रत्यय रूप हैं और दोनों की सत्ता मन पर निर्भर है| ठंडा या गर्म स्पर्श मानसिक है- एक ही वस्तु किसी को कम गरम और किसी को अधिक गर्म लगती है| बुखार में चीनी भी कड़वी लगती है| पीलिया के रोगी को सफेद वस्तु भी पीली दिखाई देती है| इसी प्रकार मूल गुण भी दृष्टा पर निर्भर हैं| विभिन्न दृष्टिकोण से देखने पर वस्तुओं का आकार और विस्तार भिन्न-भिन्न दिखाई देते हैं| एक ही वस्तु दूर से देखने पर छोटी और पास से देखने पर बड़ी लगती है| एक ही वस्तु सामने से देखने पर गोलाकार लगती है, बगल से देखने पर अंडाकार प्रतीत होती है| फिर मूलगुण और उपदगुण सदा साथ रहते हैं| उनको एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है| अतः सिद्ध है कि दोनों एक ही प्रकार के गुण हैं और मन में रहते हैं| इनका भेद काल्पनिक और अनुचित है| इसलिए इन मूल गुणों को बाह्य पदार्थों का वास्तविक धर्म मानना और उनके आधार पर बाह्य पदार्थों की सत्ता सिद्ध करना, दोनों ही बातें गलत हैं| न किसी द्रव्य में विश्वास करने का हमारे पास कोई आधार है और ना ही मूलगुण एवं उपगुण में|

बर्कले के अनुसार यदि सच्चे अर्थ में अनुभव को ही ज्ञान के साधन के रूप में लिया जाए तो " matter" नाम के किसी द्रव्य में विश्वास करने का हमारे पास कोई आधार नहीं है और ना ही मूलगुण और उप गुणों में भेद करने का कोई आधार हमारे पास है| अनुभव यदि ज्ञान का साधन है तो अनुभव हमें सिर्फ प्रत्ययों का होता है, इसलिए सिर्फ प्रत्यय ही वास्तविक हैं| उनके अथवा उनके बाह्य आधार के रूप में किसी जड़ द्रव्य को मानने की कोई आवश्यकता नहीं है|

सत्ता अनुभव-मूलक है (Esse Est Percipi)

जड़ तत्व का खंडन करके बर्कले अपने सिद्धांत का प्रतिपादन करते हैं| उनके सिद्धांत का आधार सूत्र है- "सत्ता अनुभव-मूलक है"| अर्थात उसी की सत्ता मानी जा सकती है जो अनुभव किया जा सकता है| इसके विपरीत उनकी कोई सत्ता नहीं है जिनका अनुभव संभव नहीं है| अनुभव कर्ता है आत्मा और अनुभव के विषय है प्रत्यय| अतः आत्मा और उसके प्रत्ययों के अतिरिक्त और किसी की सत्ता नहीं है| ईश्वर भी आत्म स्वरुप हैं, वे परमात्मा है| प्रत्यय अजड़ हैं| वे बाह्य पदार्थों के प्रतिबिंब या प्रतिकृति नहीं है| वे आत्मनिष्ठ हैं, बाह्य वस्तुनिष्ठ नहीं है| प्रत्यय बाह्य कोई विषय नहीं| जड़ तत्व की कोई सत्ता नहीं| प्रत्यय के दो रूप हैं- संवेदन और स्वसंवेदन| संवेदनों की सृष्टि ईश्वर करते हैं| स्वसंवेदनों की सृष्टि आत्मा करती है| बर्कले के अनुसार आत्मा और उसके प्रत्ययों के अतिरिक्त कोई सत्ता नहीं| हमारे प्रत्यय ही सत्य वस्तुएं हैं| बर्कले की प्रसिद्ध उक्ति है- " मैं वस्तुओं

को प्रत्यय नहीं बनाता, मैं प्रत्ययों को वस्तु बना रहा हूं|" प्रत्यय ही सत्य विषय हैं और उनकी सत्ता आत्मा के बाहर नहीं है| संसार के समस्त दृश्य पदार्थ घट, पट, मेज, कुर्सी, पेड़-पौधे, सूरज, चांद, तारे आदि सब हमारे ही प्रत्यय हैं| सब आत्मा में विद्यमान हैं| प्रतीति का विषय होना या अनुभव किया जाना अस्तित्व का द्योतक है| मान लीजिए, मेरे सामने मेज रखी है| मेज कोई बाह्य जड़ पदार्थ नहीं है, वह प्रत्यय मात्र है और आत्मा की सृष्टि है| जब तक मैं मेज को देख रहा हूं उसका अस्तित्व है| किंतु जब मैं कमरे के बाहर चला जाऊंगा तो क्या मेज की सत्ता नहीं रहेगी? बर्कले का उत्तर है- अवश्य रहेगी| 'प्रतीति का विषय होना सत्ता का सूचक है'- इस वाक्य के अनुसार प्रतीति का विषय बनने का सामर्थ्य भी इसके अंतर्गत आ जाता है| यदि मैं कमरे में ना रहूं तो भी मेज की सत्ता बनी रहेगी, क्योंकि 1. यदि मैं कमरे में होता तो मुझे मेज की प्रतीति हो सकती थी, अर्थात मेज में मेरी प्रतीति का विषय बनने का सामर्थ्य विद्यमान है, 2. अन्य कोई व्यक्ति उस मेज की प्रतीति कर रहा हो, 3. ईश्वर को उस मेज की प्रतीति सदा हो रही है| अतः बर्कले के अनुसार प्रत्ययों की सत्ता बनी रहती है; क्योंकि उनमें प्रतीति के विषय बनने का सामर्थ्य है, क्योंकि कोई ना कोई जीव उनकी प्रतीति कर रहा है और क्योंकि ईश्वर को उनकी प्रतीति सदा हुआ करती है|

रूप रस गंध आदि संबंधी गुणों को लॉक आत्म निष्ठ इसलिए मानते हैं क्योंकि उनके अनुसार यह गुण अनुभव करता पर निर्भर करते हैं परंतु उस अर्थ में तथाकथित प्राथमिक गुण भी अनुभवकर्ता पर ही निर्भर करते हैं|

एक ही दूरी किसी को बहुत अधिक और किसी को कम लगती तथा एक ही वस्तु किसी को अधिक ठोस और कड़ी तथा किसी को कम लगती है|

इसलिए सारे गुण अनुभवकर्ता के अनुभव पर ही निर्भर करते हैं, सभी उनके मन प्रत्यय हैं वस्तुएं गुणों के ही समूह हैं| इसलिए वस्तुएं अनुभवकर्ता कि मन के प्रत्यय हैं|

इस बात को बर्कले अपने प्रसिद्ध सूत्र "Esse est percipi) के द्वारा व्यक्त करते हैं जिसका अर्थ है कि वस्तुओं का अस्तित्व किसी भी अनुभवकर्ता द्वारा उसके अनुभव या प्रत्यक्ष किए जाने से भिन्न कुछ नहीं है और इसका साधारण अर्थ है कि वस्तुएं अनुभवकर्ता के मन के प्रत्ययों से भिन्न कुछ नहीं है और इसका अर्थ है वस्तु अनुभवकर्ता के मन के प्रत्ययों से भिन्न कुछ नहीं है| सत्ता दृश्यता है से तात्पर्य है कि केवल उन्हीं की सत्ता है जिनका इंद्रिय अनुभव संभव है, अनुभव के परे और किसी भी सत्ता से बर्कले इनकार करते हैं| बर्कले कहते हैं कि वस्तुओं का अस्तित्व अनुभवकर्ता के अनुभव पर निर्भर है| वे घोषणा करते हैं कि प्रत्यय से अलग पदार्थ नाम की कोई चीज नहीं है, अर्थात प्रत्यय ही पदार्थ हैं(to be is to be perceived)| बर्कले कि इस मत को आत्मनिष्ठ प्रत्यय बाद कहा जाता है| बर्कले के लिए सिर्फ प्रत्यय ही वास्तविक रह जाते हैं और उसकी सत्ता मन के बाहर नहीं है| बर्कले का यह आत्मगत प्रत्ययवाद सामान्य अनुभव के विपरीत है| बर्कले का मत है कि वस्तु का अस्तित्व हमारे अनुभव से अलग और स्वतंत्र नहीं है|